# काव्यानुवाद की समस्याएँ: ‘तिरस्कार’ कविता के विशेष सन्दर्भ में

कालिकट विश्वविद्यालय दूरस्थ शिक्षा विभाग बि. ए हिन्दी स्नातक उपाधी के आंशिक पूर्ती हेतु समर्पित परियोजना


नामः

Reg.No.:

बि.ए हिन्दी


दूरस्थ शिक्षा विभाग

कालिकट विश्वविद्यालय

2017

# DECLARATION

I, ….(Name)…….. hereby declare that this project work entitled "*KAVYANUVAD KI SAMASYAYEN : 'THIRASKAR' KAVITHA KE VISHESH SANDARBH MEIN* " is a bona fide work carried out by me and that it has not formed the basis for the award of any degree, diploma or other title of any other university.

Place: Name

DATE: Reg.No.

# विषयसूची


प्राक्कथन (3-4)

पहला अध्याय (5-8)

अनुवाद एवं अनुवाद की प्रासंगिकता

दूसरा अध्याय (9-16)

काव्यानुवाद परंपरा एवं वर्तमान

तीसरा अध्याय (17-21)

काव्यानुवाद की समस्याएँः 'तिरस्कार' कविता के विशेष सन्दर्भ में

उपसंहार (22-23)

संदर्भग्रन्थ सूची

## प्राक्कथन

भूमंडलीकरण के वर्तमान परिवेश में भाषा अपनी सीमाओं को पार कर 'ग्लोबल विल्लेज' जैसी संकल्पनाओं से जुड रही है। अतः आज अनुवाद की प्रासंगिकता बढती जा रही है। भारत जैसे बहुभाषा भाषी देश में तो अनुवाद की उपादेयता स्वयंसिद्ध है।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अनुवाद की प्रासंगिकता बढ़ी है। इस उत्तर आधुनिक दौर में अनुवाद एक ऐसा सच्चाई बनकर उभरा है कि अब हर कोई मानने लगा है कि दुनिया का काम अनुवाद के बिना नहीं चल सकता है। अनुवाद केवल ज्ञान ही नहीं बल्कि सामाजिक, राजनीतिक व सांस्कृतिक व्यवस्थाओं को भी प्रभावित करने की क्षमता रखती है अतः अनुवाद का महत्व दिन-ब दिन बढ़ती ही जा रही है। अनुवादकों के अथक परिश्रम और दूरदृष्टिका का ही परिणाम है कि अन्य भाषाओं में रचित ज्ञान-विज्ञान तथा चिंतन-मनन को जानने-समझने में आसानी हुई है यदि मानवीय मनीषा ने अनुवादों का यह सिलसिला शुरु न किया होता तो आज संस्कृत , हिंदी तथा भारत की अन्य भाषाओं के महान साहित्यकारों की उत्कृष्ट कृतियाँ और विश्व की अन्य भाषाओं में प्रकाशित महान रचनाएँ अपनी-अपनी भाषाओं के पाठकों तक संकुचित होकर रह जातीं ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्रों के साथ-साथ आज व्यापार या व्यावसायिक क्षेत्रों में भी अनुवाद की आवश्यकता दिन प्रति दिन बढ़ती

**जा रही है।** संप्रेषण के नये माध्यमों के आविष्कारों ने 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की कल्पना को साकार बना दिया है।

## अध्ययन की प्रणाली

मूल पाठ और अनूदित पाठ का अध्ययन और विशलेशण इस परियोजना की अध्ययन प्रणाली है। अनूदित पाठ का मूल्यांकन भी इसमें शामिल है।

पूर्वाध्ययन

उत्तर और दक्षिण की हिन्दी पत्रिकाओं के द्वारा अब तक अनेक अनूदित कविताऐं और अनूदित कविताओं का मूल्यांकन भी प्रकाशित हो चूकी है। कालिकट विश्वविद्यालय में हिन्दी में अनूदित मलयालम कविताओं का सौन्दर्यशास्त्रीय तुलनात्मक अध्ययन विषय पर शोधकार्य हुआ है। केरल विश्वविध्यालय में मलयालम से हिन्दी में अनूदित उपन्यासों का मूल्यांकन अनुवाद सिद्धान्त के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन हुआ है।

## पहला अध्याय

## अनुवाद एवं अनुवाद की प्रासंगिकता

अनुवाद एक सृजनात्मक प्रक्रिया है। इस के ज़रिए भाषा विशेष के साहित्य में अंतर्निहित अभिव्यक्तियों, संवेदनाओं, विचारधाराओं, जीवनानुभूतियों, सांस्कृतिक तत्वों का परिचय मिलता है। अनुवाद आज जीवन व्यवहार का अनिवार्य अंग बन चुका है। अनुवाद एक कृति को दूसरी कृति में कायांतरित करने की कला है। अनुवाद सृजन है, पुनर्रचना है और एक प्रकार से मौलिक लेखन भी। अनुवाद अत्यन्त प्राचीन एवं श्रम साध्य कला है जिसका महत्व आज प्रत्येक क्षेत्र में देखा जा सकता है। अनुवाद -अध्ययन आधुनिक युग की माँग है। आज अनुवाद ने साहित्य के क्षेत्र की अपनी सीमा को लाँघकर मानव व्यवहार को सभी क्षेत्रों को अपनी सीमा में सम्मिलित कर लिया है।

आधुनिकरण की सतत प्रक्रिया से जो नया चिन्तन, नई दिशा और नया दृष्टिकोण आ रहा है, उससे अनुवाद की कलात्मक, वैज्ञानिक और शिल्पपरक प्रकृति में नए-नए आयाम जुडे रहे हैं। आधुनिक युग में ज्ञान-विज्ञान की नवीन क्षेत्र खुल रहे है, कंप्यूटर एवं प्रौद्योगिकी की प्रगति हो रही हैं। वहाँ अनुवाद विज्ञान की महत्ता संवयसिद्ध होने लगी।

एक भाषा में अभिव्यक्त भावों, विचारों, अनुभूतियों एवं संवेदनाओं को दूसरी भाषा में सन्निकट अभिव्यक्ति के रूप में सजीव प्रस्तुतीकरण अनुवाद है। अनुवाद से रचना या साहित्य का प्रचार क्षेत्र व्यापक हो रहा है।

## 1.1 अनुवादः अर्थ एवं परिभाषा

अनुवाद शब्द का मूल 'वद्' धातु से है। संस्कृत व्याकरण के अनुसार इसका अर्थ है बोलना या कहना। 'वद्' धातु में 'घञ्' प्रत्यय और 'अनु' उपसर्ग जोड कर अनुवाद शब्द उत्पन्न हुआ। 'अनु' का अर्थ है- पीछे, साथ-साथ, बाद में आदि। इस प्रकार अनुवाद का अर्थ है किसी के कहने के बाद कहना, पुनःकथन अथवा पुनरुक्ति।

'अनुवाद' पहले दर्शनशास्त्र का पारिभाषिक शब्द था। न्यायसूत्र में इसका प्रयोग इस प्रकार मिलता है-

विध्यर्थवादानुवाद वचन विनियोगात्

विधिविहित स्यानुवचन मनुवाद।।

अर्थात् विधि और विहित का अनुवचन ही अनुवाद है।

'शब्दार्थ चिन्तामणी' कोश में अनुवाद का अर्थ "प्राप्तस्य पुनः कथने" या ज्ञातार्थस्थ प्रतिपादने अर्थात् पहले कहे गए अर्थ का फिर से कहना बताया गया है। उपनिषदों में इसका प्रयोग आवृत्ति के अर्थ में किया गया है। मनुस्मृति के प्रसिद्ध टीकाकार कुल्लूक भट्ट (4.124 पर) कहते हैं-

सामगानश्रुतौ ऋग्यजुषोरनध्याय उक्तस्तस्यायमनुवादः।

यहाँ भी अनुवाद का अर्थ पुनःकथन है। भारतीय दर्शन मीमांसा, उपनिषद तथा वैदिक साहित्य में छाया, भाषा, टीका, व्याख्या, भावानुवाद, भाषान्तरण, तरजुमा आदि अनेक शब्द प्रचलित है। उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में पारिभाषिक शब्द के रूप में अनुवाद शब्द को मान्यता मिली।

हिन्दी में अनुवाद शब्द का प्रयोग अंग्रेज़ी के Translation शब्द के पर्याय में प्रचलित है। यह Trans और lation के योग से बना है। Trans का अर्थ है 'पार' और lation शब्द लैटिन भाषा से है जिसका अर्थ है ले जाने की क्रिया। अतः Translation का अर्थ हुआ इस पार से उस पार या दूसरे पारे ले जाना।

डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार- "भाषा ध्वन्यात्मक प्रतीकों की व्यवस्था है और अनुवाद इन्हीं प्रतीकों की प्रतिस्थापना, अर्थात् एक भाषा के प्रतीकों के स्थान पर दूसरी भाषा के निकटतम (कथनतः और कथ्यतः) समतुल्य और सहज प्रतीकों का प्रयोग।"[1]

डॉ. एन.ई विश्वनाथ अय्यर का मानना है कि अनुवाद की प्रविधि एक भाषा से दूसरी भाषा में रूपान्तरित करने तक सीमित नहीं। एक भाषा के एक रूप के कथ्य को दूसरी रूप में प्रस्तुत करना भी अनुवाद है। अनुवाद की प्रविधि के दौरान भाषिक समन्वय हो जाता है।

अनुवाद विज्ञान के प्रणेता नाइडा के अनुसार Translating consists in producing in the receptor language the closest natural equivalent to the message of the source language, first in meaning and secondly in style.

अर्थात् स्त्रोत भाषा के संदेश को लक्ष्य भाषा में अर्थ तथा शैली की दृष्टि से निकटतम सहज समतुल्यों द्वारा पुनर्सृजित करना ही अनुवाद है।

प्रसिद्ध भाषाविद्वान न्यूमार्क के मतानुसार अनुवाद एक शिल्प है, जिसमें एक भाषा में लिखित सन्देश के स्थान पर दूसरी भाषा में उसी सन्देश को प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया जाता है ।

---

[1] अनुवाद विज्ञान - भोलानाथ तिवारी, पृ.14

ए.ऐ रिचार्डस के अनुसार Translation is one of the most complex activities in Cosmos अर्थात अनुवाद पूरे ब्रह्माण्ड में सबसे जटिल प्रक्रिया है। प्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक जे.सी.कैटफार्ड के अनुसार Translation is the replacement of textual material in one language (SL), by equalent textual materil in another language ( TL). अर्थात अनुवाद स्रोत भाषा की पाठ्या सामग्री का लक्ष्य भाषा की समतुल्य पाठ्य सामग्री द्वारा प्रतिस्थापन हैं।

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर यह कह सकते है कि अनुवाद कर्म में मूल पाठ सामग्री पर ध्यान केन्द्रित करना अत्यन्त आवश्यक है। एक भाषा की प्रतीक व्यवस्था को दूसरी भाषा की प्रतीक व्यवस्था में सावधानी से भाषान्तर करने का प्रयास हैं। लक्ष्य भाषा के अनुकूल उसकी भाषिक संरचना एवं सांस्कृतिक पहलुओं को समझकर स्रोतभाषा के समतुल्य एवं निकटतम स्तर पर अनुवाद कार्य करें।

भूमंडलीकरण के कारण आज अनुवाद हमारी सामाजिक आवश्यकता बन गया है। इसलिए इसके विविध आयामों एवं पहलुओं पर काफी गंभीर विवेचन और विश्लेषण की प्रक्रिया चल रही है। अनुवाद के सैद्धान्तिक और व्यावहारिक विवेचन में भी काफी गहन चिन्तन की आवश्यकता है।

## दूसरा अध्याय

## काव्यानुवाद परंपरा एवं वर्तमान

ज्ञान के साहित्य का अनुवाद प्रबुद्ध मानव के बौद्धिक विकास केलिए उपयोगी है तो काव्य जैसे रागात्मक साहित्य का अनुवाद मानव की अंतवृत्तियों की समृद्धि एवं परिष्कार केलिए अत्यन्त महत्वपूर्ण तथा उपयोगी है। कवि की अनुभूति की सघनता एवं गहनता की परिणति काव्य का अनुवाद सबसे दुष्कर कार्य है। क्योंकि साहित्य के अन्य विधाओं से हटकर कविता सर्वाधिक सृजनशील विधा है। कविता असल में कवि मन की भावात्मक अभिव्यक्ति है।

काव्यानुवाद का मुख्य लक्ष्य है, विश्व की अमर कृतियों को विश्व के पाठकों तक पहुँचाना। इसलिए ही प्रत्येक युग का साहित्यकार विविध बाधाओं कठिनाइयों से जूझता हुआ भी विभिन्न भाषाओं की अमर रचनाओं का रूपान्तर अपनी भाषा के सहृदय समाज को सौंपने का महान कार्य करता है।

काव्यानुवाद की परंपरा काफी पुरानी है। फिर भी ज्यादातर अनुवादक मूल सृजन तक न पहुँचकर अनुकर्त्ता या अधिक से अधिक व्याख्याकार तक सीमित हो जाता है। प्रतीभाशील कुछ अनुवादक ही पुनसृर्जन में सफल हो पाते है। काव्यानुवाद संबन्धित कई विद्वानों ने अपना विचार व्यक्त किया है। ज्यादातर विद्वानों ने काव्यानुवाद को दुस्साध्य एवं दुष्कर कार्य माना है। क्योंकि मूल भाषा की साहित्यक संवेदना अपनी प्रकृति में इतनी विशिष्ट होती है कि उसका दूसरी भाषा में अवतरण प्रायः असंभव सा होता है।

भोलानाथ तिवारी काव्यानुवाद को किसी कविता का यथा संभव निकटतम समतुल्य रखने पर ज़ोर देते हुए कहते है कि काव्य कला अन्ततः उन शब्दों पर निर्भर

होती है जिनके द्वारा उसकी अभिव्यक्ति होती है और यहाँ शब्द केवल अर्थ का भाववाहक नहीं होता, उसकी अपने आप में कुछ सत्ता-महत्ता होता है, उसकी अपनी ध्वनि होती है, अपना संगीत होता है अपना विशिष्ट संस्कार, परिवेश, इतिहास और रूपवैभव होता है।

काव्यानुवाद में अनुवादक द्वारा सर्वप्रथम स्रोत भाषा की सामग्री का सतही दृष्टि से अध्ययन किया जाता है और उसका अर्थ ग्रहण किया जाता है साथ ही उसका काव्यशास्त्रीय अर्थ समझा-परखा जाता है। स्रोत भाषा की सामग्री में विद्यमान बिंब, प्रतीक, अलंकारों को समझने का प्रयास होता है। अगला चरण है रस सम्मत अर्थ की अभिव्यक्ति करने केलिए उपयुक्त शब्दावली का चयन/पर्याय-चयन, शब्द गूंफन एवं अभिव्यक्तिकरण के पश्यात इसका अनुशीलन किया जाता है। फिर भावानुशीलन किया जाता है और अन्त में काव्य को लक्ष्य भाषा में रूपान्तरित किया जाता है।

कविता का अनुवाद करते समय अनुवादक को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जैसे कि ध्वन्यात्मक अभिव्यक्तियों का अनुवाद तथा नाद सौन्दर्य, छन्द, अप्रस्तुत विधान और साहित्यमूलक शब्दावली का अनुवाद। अर्थात् काव्य का अधिकांश हिस्सा ध्वन्यार्थमूलक व्यंग्यार्थपरक, निहितार्थमुक्त, संकेत प्रधान तथा गूढार्थ से युक्त होता है। इन सभी पहलूओं को समझने एवं लक्ष्यभाषा में सार्थक रूप से प्रस्तुत करने में एक प्रतिभाशाली अनुवादक ही सफल हो पाता है। काव्य की ध्वनि एवं शैली लयात्मक है, अनुवादक को इन तत्वों को भी अनुवाद में समाविष्ट करना है।

हर भाषा की संरचना अलग स्तर की होती है। मलयालम - हिन्दी काव्यानुवाद के संदर्भ में देखा जाये तो मलयालम द्राविड संस्कृति की भाषा है तो हिन्दी आर्य संस्कृति की। दोनों में अपनी-अपनी सांस्कृतिक परंपरा है

## 2.1 अनुवादः भारतीय परंपरा

भारत में अनुवाद की बहुआयामी परंपरा प्राचीनकाल से चली आ रही है। संस्कृत के वैदिक, औपनिषदिक तथा पौराणिक साहित्य से होती हुई यह परंपरा मध्यकाल तक चली आई। मध्यकाल में संतों ने संस्कृत और पालि के साहित्य, दर्शन, धर्म, नीति आदि अनुवाद करके जनजागरण किया। 19 वीं शताब्दी में भारतीय प्राचीन ग्रन्थों के साथ-साथ पश्चिमी साहित्य विशेषकर अग्रेज़ी के महत्वपूर्ण ग्रन्थों के भी अनुवाद हुए। भारतीय भाषाओं में से ज्यादातर बंगला भाषा के श्रेष्ठ साहित्यकारों जैसे बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय, शरदचन्द्र रवीन्द्रनाथ ठाकूर के विविध साहित्य विधाओं का अनुवाद हुआ।

अनुवाद के भारतीय विद्वानों में सर्वश्री आर.रघुनाथराव, वासुदेवन नंदन प्रसाद, नगेद्र, डॉ. भोलानाथ तिवारी, डी.पी पटनायक, प्रो. हरीश द्विवेदी, डॉ. सुरेश कुमार, सुजीव मुखर्जी, प्रो. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव,जी.गोपिनाथन, विश्वनाथ अय्यर तथा कैलाशचन्द्र भाटिया उल्लेखनीय है।

### 2.1.1 भारतीय कृतियों का भारतीय भाषाओं में अनुवाद

भारत में संस्कृत से भारतीय भाषाओं में अनुवाद की लंबी परंपरा है। संस्कृत में लिखित साहित्य अपनी गुणवत्ता और साहित्यक वैशिष्ट्य के कारण अत्यन्त महत्वपूर्ण है। प्राचीन भारत और उसकी संस्कृति को समझने का रास्ता संस्कृत में रचित साहित्य से प्राप्त होता है। भास, कालिदास, अश्वघोष, देर्डा, भवभूति, बाणभट्ट जैसे अनेक रचनाकारों की रचनायें भारतीय एवं विश्व भाषाओं में भी अनूदित हुए। पालि, प्राकृत तथा अपभ्रंश में काफी अनुवाद कार्य हुआ। प्राकृत से संस्कृत में अनुवाद का सबसे प्रसिद्ध उदाहरण 'गुणाढ़य की बृहत कथा' है। क्षेमेन्द्र ने इन कथाओं का अनुवाद 'कथा सरित्सागर

बृहत्कथा मंजरी’ में शामिल किया है। अपभ्रंश में लिखा गया जैन ग्रन्थों का अनुवाद संस्कृत में होता था। बौद्ध दर्शन की रचनायें पालि में मिलती है जिनका अनुवाद श्रीलंका में बुद्ध के निर्वाण के 520 वर्ष बाद प्राप्त हुआ।

संस्कृत में रचित रामायण और महाभारत जैसी कालजयी रचनाओं का अनुवाद प्राकृत भाषाओं में हुआ तथा पुराणों के अनुवाद संस्कृत से कई क्षेत्रिय भारतीय भाषाओं में हुआ है। भारतीय साहित्य एवं अनुवाद के अध्येता डॉ.ए.के.रामानुजन ने 300 रामायणों की बात की है। अधिकांश अनूदित रामायण में अपने देश एवं भाषा का प्रभाव है।

आधुनिक भारतीय भाषाओं में दक्षिण की प्राचीनतम भाषा तमिल में काफी महत्वपूर्ण अनुवाद हुआ है। संस्कृत से कई ग्रन्थों का सीधा अनुवाद तमिल में किया गया है। तमिल के प्रथम व्याकरण ‘तोलकाप्पियम’ में अनूदित ग्रन्थों को ‘वषि़नूल’ संज्ञा दी गई है। तमिल में जैनकथा, बौद्धकथा, महाभारतकथा आदि पर आधारित जो रचनाएँ लिखी गई उनका स्वरूप एक प्रकार से अनुवाद ही है। अनुवाद के क्षेत्र में बंगला और मराठी भाषा का भी उल्लेखनीय स्थान है। बंगाल के कवियों में माइकल मधुसूदनदत्त, महाकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर, बेकिमचन्द्र एवं मराठी के बाल गंगाधर तिलक की रचनाओं का कई भारतीय भाषाओं अनुवाद हुआ है।

भारतीय साहित्य को विश्व साहित्य से जोडने में हिन्दी की अहम भूमिका है। अधिकांश कृतियाँ पहले हिन्दी में अनूदित होते है बाद में अन्य भारतीय भाषाओं में। हिन्दी साहित्य के इतिहास को परखने पर यह मालूम पडता है कि भारतेन्दु काल में अनुवाद कार्य काफी सार्थक रूप से हुआ। स्वयं भारतेन्दु ने शेक्सपियर के नाटक ‘मरचेंट आफ वेनिस’ का हिन्दी अनुवाद ‘दुर्लभ बन्धु’ नाम से किया।

भारतेन्दु के बाद महावीर प्रसाद द्विवेदी युग में भी अनूदित रचनाएं उपलब्द हैं। स्वयं प्रेमचन्द्र ने उर्दु में लिखित अपने ही उपन्यासों का अनुवाद हिन्दी में किया। आगे चलकर रामचन्द्रशुक्ल, मैथिलीशरण गुप्त, सुमित्रानन्दन पंत, बच्चन, श्रीधर पाठक आदि कई हिन्दी के श्रेष्ठ साहित्यकारों ने अनुवाद साहित्य को श्रीवृद्दि की।

## 2.2 अनुवादः पाश्चात्य परंपरा

अनुवाद की पाश्चात्य सैद्धान्तिक चिन्तन परंपरा ई.वीं. पूर्व पहली शताब्दी यानी रोमन युग में बाईबिल तथा ग्रीक एवं लैटिन के श्रेष्ट ग्रन्थों के अनुवाद से शुरू हुई। डॉ.जी. गोपिनाथन का मानना है कि पश्चिम के अनुवाद विषयक सिद्धान्तों एवं अध्ययनों के तीन चरण स्पष्ट रूप से देख सकते हैं। अनुवाद विषयक प्रारंभिक चिन्तन बाइबिल के अनुवादों के आधार पर विकसित हुआ। पुनर्जागरण के बाद काव्य तथा अन्य साहित्यिक विधाओं के अनुवाद की प्रक्रिया एवं सिद्धान्तों की ओर अनुवादकों का ध्यान गया। तीसरा युग अनुवाद के भाषावैज्ञानिक सिद्धान्तों का युग है।

युनस्को और उनके सहयोगी अनुवादकों के अन्तर्राष्ट्रीय संगठन तथा यूरोप और अमेरिका के कई अनुवाद परिषदों ने अनुवाद चिन्तन का एक वैज्ञानिक ढाँचा प्रस्तुत की। अनुवाद विज्ञान के क्षेत्र में तत्कालीन पत्रिका 'बेबल' का महत्वपूर्ण योगदान है।

## 2.3 केरल में काव्यानुवाद की परंपरा

केरल की मातृभाषा मलयालम है जो द्राविड वर्ग की है। मलयालम समृद्ध एवं परिमार्जित भाषा होने के कारण मलयालम से अन्य भारतीय एवं विदेशी भाषाओं में और उसी प्रकार अन्य भाषाओं से मलयालम में भी काफी रचनाओं का अनुवाद हुआ है। केरल में हिन्दी अथवा हिन्दुस्थानी भाषा का प्रचलन अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के सिलसिले से जुडे हुए है। इसके अलावा धार्मिक ऐतिहासिक और साहित्यक पृष्टभूमि से भी इसका संबन्ध है।

मध्ययुग में हिन्दी केरल में कई नामों से जानी जाती थी। प्रमुखतः ‘गोसायि भाषा’, तुलुक्क भाषा, पट्टाणि भाषा, दक्किनी, हिन्दुस्थानी, इन्दुस्थानी आदि शब्द प्रयुक्त होते है।”[2]

प्रागैतिहासिक काल से ही केरल में साहित्यक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक आदान-प्रदान की गतिविधियाँ सक्रिय रूप से शुरू हो गयी थी। बौद्ध जैन एवं ईसाई धर्म प्रचारक केरल में आये और उनकी संस्कृति से तादात्मय प्राप्त हुए। मुगलों का आक्रमण भी दक्षिण भारत में हिन्दी को प्रमुखता मिलने का एक वज़ह बना। तमिलनाडु के आर्काट नवाब मैसूर के कर्णाटिक नवाब, हैदरबाद के निज़ाम आदि मुस्लिम शासकों के साथ केरल के राजाओं का राजनीतिक संबन्ध बहुत ही सुदृढ़ था। “कोच्चिन के राजाओं साथ हुई टीपू की एक संधि के अनुसार राजपरिवार के लोगों को हिन्दुस्थानी सिखाने केलिए राजा बाध्य हो गये थे।”[3] सत्रहवीं अठारहवीं शताब्दियों में राजकीय पत्र व्यवहार केलिए हिन्दुस्थानी का प्रयोग हुआ। फलस्वरूप तत्काल हिन्दी को केरल में प्रमुखता मिली।

‘प्राचीन काल से ही तीर्थ स्थान एवं मन्दिर सांस्कृतिक आदान-प्रदान का प्रमुख केन्द्र बना। केरल के भक्त और साधु उत्तर भारत के मथुरा, वृन्दावन, काशी, बदरीनाथ आदि तीर्थस्थानों में जाते थे तो उत्तर भारत के भक्त दक्षिण के कन्याकुमारी, गुरुवायूर, शूचीन्द्रम आदि तीर्थस्थानों में आये करते थे।”[4] विभिन्न धार्मिक संप्रदाय के अनुयायियों द्वारा केरल में हिन्दी प्रचार हुआ। भक्तों के आगमन के साथ भक्तिमय संगीत का भी प्रचार हुआ। भजन

---

2 केरलीयों की हिन्दी को देन – जी. गोपीनाथन, पृ.12

3 दक्षिण भारत में हिन्दी प्रचार आन्दोलन का समीक्षात्मक इतिहास – श्री.पी. के. केशवन नायर, पृ.302

4 केरलीयों की हिन्दी को देन – जी. गोपीनाथन, पृ.

में संस्कृत और मलयालम के भजन की तरह हिन्दी भजन भी गाने लगे। इस प्रकार के धार्मिक संगीत ने केरल में हिन्दी के प्रचार केलिए नया माहोल पैदा किया।

मध्य युग में व्यापार के द्वारा केरल में हिन्दी का प्रचलन होने लगा था। हिन्दी व्यापार का प्रमुख माध्यम था। व्यापार के सिलसिले में अरब और कच्छ से कई मुसलमान व्यापारी केरल में आकर बसने लगे। केरल के सुगन्ध द्रव्यों मसालों और कलाशिल्पों केलिए व्यापारियों का आगमन केरल में निरन्तर होता रहा। फलतः केरलीय व्यापारियाँ हिन्दी भाषा अध्ययन केलिए मज़बूर हुए।

मलयालम की भाँति हिन्दी में भी खडी बोली और ब्रज के साथ अवधी और अरबी-फारसी मिश्रित उर्दु की मिसाल मिलती है। हिन्दी प्रदेशों में जब साहित्य में ब्रजभाषा का बोलाभाला दिखाई पडता है मलयालम साहित्य ने भी इस भाषा को अपनाने का साहस किया। तिरुवितांकूर रियासत के महाराजा स्वाति तिरुनाल रामवर्मा अपने इष्टदेव श्री पद्मनाभ स्वामी की स्तुति व्रजभाषा में वावन गये पद रचे।

उपयुक्त माध्यमों से हिन्दी का मौखिक प्रचलन ही अधिक मात्रा में हुआ था। कोश व्याकरण ग्रंथ एवं महाराजा स्वातितिरुनाल के हिन्दी गीतों के अलावा अठारहवीं शताब्दी से पूर्व केरल में लिखित हिन्दी सामग्री प्राप्त नहीं हुई है।

## 2.4 केरल में हिन्दी साहित्य

बीसवीं शती के द्वितीय चरण के प्रारंभ से केरल में हिन्दी का प्रचार आन्दोलन शुरू हुआ। 1920 के दशक में भारत के अन्य प्रान्तों की तरह केरल में भी स्वदेशी और खादी के साथ हिन्दी को अपनाया। स्वातंत्र्योत्तर काल में राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा के रूप में हिन्दी का विशेष अध्ययन होने लगे।

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की ओर से इस दिशा में सराहनीय कार्य हुआ। अभयदेव, नारायण देव, पि के केशवन नायर जैसे विद्वजनों ने हिन्दी प्रचार में काफी महत्वपूर्ण काम किया। सभा के मुख पत्र 'हिन्दी प्रचार' पत्रिका में केरलीय लेखकों की अनेक लेख एवं अनूदित रचनायें छपती थी। 1930-40 दशाक में प्रेमचन्द्र ने अपनी विख्यात पत्रिका 'हंस' में भारतीय भाषाओं से हिन्दी में अनूदित रचनाओं का विशिष्ट स्थान दिया। प्रो. एन. चन्द्रहासन 'हंस' से सलाहकार समिति में मलयालम के प्रतिनिधि थे फलस्वरूप मलयालम हिन्दी अनुवाद का सराहनीय काम हुआ।

हिन्दी पत्रिकाएं भी मलयालम - हिन्दी अनुवाद में रुचि लेने लगीं। इनमें प्रमुख पत्रिकाएं हैं - विशाल भारत, विश्वमित्र रसवंती, ज्योत्सना, सारथी, हिन्दी मित्र, आये केरली, ललकार विश्व भारती, प्रताप, राष्ट्रवाणी, युग प्रभात, केरल भारती, केरल ज्योति आदि।

## तीसरा अध्याय

## काव्यानुवाद की समस्याएँ: 'तिरस्कार' कविता के विशेष सन्दर्भ में

भाषा विचारों की संवाहिका है तो अनुवाद विविध भाषाओं एवं विविध संस्कृतियों से साक्षात्कार करनेवाला साधन। मलयालम के समकालीन कवियों में प्रमुख है के. जी. शंकरपिल्लै। वे महान मानवीय मूल्यों और मनुष्यता के खोज के कवि है। 'कोच्चि के दरख्त' 27 कविताओं के संकलन है। इस संकलन के एक छोट्टी सी कविता है **'तिरस्कार'**। इसका अनुवाद कोच्चिन विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष डॉ.ए. अरविन्दाक्षन जी ने किया है। के.जी.शंकरपिल्लै की कविता में जोश, उत्साह, पौरुष और संघर्ष की अजस्त्र धारा बहती है। देश की राजनीति जब जनविरोधी रूप धारण कर लेती है, सरकार साम्राज्यवादी शक्तियों की गोद में बैठती है जन-संघर्ष का दमन करती है तो ऐसे परिवेश में उनकी कविताओं में आक्रोश का स्वर मुखरित होता है। के.जी. शंकर पिल्लै की निरीक्षण क्षमता विशेष रूप से उल्लेखनीय है। जहाँ प्रायः लोगों की दृष्टि नहीं जाती उन विषयों को भी कवि अपने कविताओं में स्थान दिया है जैसे धोती, चॉकलेट, छिपकली आदि। के.जी.शंकर पिल्लै की कविता का अपना अर्जित मुहावरा है जो भीड़ में खो नहीं जाता है।

### 3.1 कविता का सारांश

एक बार एक महर्षि ने एक चुंजे और एक कौए के बच्चे को पास बुलाकर कहा तेरा पंख ज्ञान है। जबतक पक्के न हो, अन्धेर भरी झीलों, गुलेल सी आंखोंवाले बाज़ार की ऊपर, बन्दूक सी आंखोंवाले शहरों के ऊपर उडना नहीं।

छोटी मुर्गी  यह सुनकर कटहल के पेड की छाया में दाना बीनती रही, इस निश्चय से कि समझदार होने के बाद उडना बेहतर होगा। लेकिन कौए का बच्चा यह कहकर उड चला कि महर्षि का हर शब्द ताबूत जैसा है। इस प्रकार वह फलों की नयी वादियों की ओर, सटती जूठन की ओर, चबूतरे पर रखे श्राद्ध की  ओर, बारिस, धूप सबको झेलकर बाण के लक्ष्य के साथ बराबर उठता रहा। इस यात्रा में वह मोर से, कोयल से और हंस से पराजित ते हुआ लेकिन जनतंत्र में जीतकर अधिकार में आस्थावान होकर अपनी कालेपन में बढते हूए वह एक बडा कौआ बन गया।

मुर्गी इस बीच कटहल की छाया तले जवान और खुबसूरत हो गयी। घर के व्याकरण में वह मस्त रहे। यादों, सपनों और बेबसियों को वह बीनती रहे। पढे लिखे परिपक्व अकलमन्दी की भूख से जो आये उन्होंने उसे पकड़ लिया। उसकी खुबसूरती को उतार फेंककर  उन्होंने उसे खा लिया।

### 3.1.1 अर्थ पक्ष

मूल पाठ जिस प्रकार अपने संदेश द्वारा स्रोतभाषा के पाठकों पर प्रभाव डालता है उसी प्रकार अनूदित पाठ से भी लक्ष्यभाषा के पाठकों पर प्रभाव डालने की अपेक्षा की जाती है।  अनुवाद में संप्रेक्षण का सर्वाधिक महत्व है।  शब्दों, वाक्यों, अभिव्यक्ति पक्षों तथा प्रयुक्तियों तक व्याप्त अनुवाद प्रक्रिया में अनुवादकों की कई कठिनाईयों का सामना करना पडा है।  शब्दों का चयन वाक्यों को जोडे-तोडे बिना निरंकुश अभिव्यंजन पक्षों से युक्त होकर अनुवाद करने में काफी प्रतिभा की ज़रूरत पडती है।

“അറിവാണ് ചിറകുകൾ

ചിറകുറയ്ക്കാതെ പറക്കരുത്

ആഴം ഇരുളുന്ന തടാകങ്ങൾക്ക് മീതെ

കവണക്കൈകളുള്ള ചന്തകൾക്ക് മീതെ

തോക്കിൻ കണ്ണുള്ള നഗരങ്ങൾക്ക് മീതേ

പക്വത വരാതെ പറക്കരുത്" (തിരസ്കാരം)

"पंख हैं ज्ञान

जब तक पंख पक्के न हो, उडना नहीं

अंधेर - भरी झीलों के ऊपर

गुलेल - सी आँखों वाले बाज़ार के ऊपर

बन्दूक - सी आँखों वाले शहरों के ऊपर

परिपक्व हुए बगैर

उडना नही." (तिरस्कार)

अनुवादक ने मुल पाठ को लक्ष्य भाषा के अनुकूल सफलता पूर्व अनूदित किया हैं।

### 3.1.2 भाव पक्ष

अनुवादक का काम मूल को यथासंभव आकर्षक बनाकर पेश करना है। मूल लेखक को अपने विचारों और शब्दों के चयन में पूरी स्वतंत्रता होती है, जो अनुवादक के पास नहीं

होती, वह मूल रचनाकार के भावों से बँधा होता है, और उनके निकटतम शब्दों का चयन करता है।

“പഠിച്ച് പക്വത നേടിയവർ

ബുദ്ധിയുള്ള വിശപ്പുമായി വന്ന്,

പിടിച്ച്

ചന്തങ്ങളഴിച്ചെറിഞ്ഞ്

തിന്നു. ” (തിരസ്കാരം)

“पढे-लिखे

परिपक्व

अकलमन्दी की भूख से जो आये उन्होंने

इसे पकड लिया

उसकी खूबसूरती को उन्होंने उतार फेंका

और उसे खा लिया।” (तिरस्कार)

यहाँ अनुवादक ने मूल के समान सहज एवं रोजक बनाने केलिए अनूदित पाठ में पंक्तियों को जोड दिया है

### 3.1.3 सांस्कृतिक पक्ष

मूल और लक्ष्य दोनों भाषाएँ सामाजिक-सांस्कृतिक धरातल पर नितांत भिन्न है। एक समाज को रूपायित करने में वहाँ रहनेवाले लोगों के रीति-रिवाज़ वेश भूषा खान-पान, त्योहार-पर्व, कला संगीत व साहित्य, जाति और धर्म का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। इन सामाजिक विशेषताओं के संयोग से संस्कृति का रूपायन होता है। अनुवाद करते समय इन मुद्दों को ध्यान रखना चाहिए।

“നനഞ്ഞ് കൈകൊട്ടുന്ന ശ്രാദ്ധമുറ്റത്തേക്ക്

പിതൃക്കളുടെ കണ്ണുമായി” (തിരസ്കാരം)

‘श्राद्धम्’ शब्द केरल के रीती रिवाज़ों से जुडी है इसे हिन्दी भाषी के समक्ष अनुवादक ने इसप्रकार प्रस्तुत किया है।

“चबूतरे पर रखे श्राद्ध की ओर

पितृ पिण्ड की आखों के साथ” (तिरस्कार)

यहाँ अनुवादक ने बडी सावधानी से मूल का अर्थ अनूदित पाठ में भी ध्योदित किया है।

**उपसंहार**

लोगों में आज समकालीन साहित्य को पढ़ने की ललक बढ़ती जा रही है। इस कारण आज विश्व भर में साहित्यक अनुवाद की बड़ी माँग है। भारत जैसे बहुभाषा भाषी देश में तो अनुवाद की उपादेयता स्वयंसिद्ध है। भारत के विभिन्न प्रदेशों के साहित्य में निहित मूलभूत एकता के स्वरूप को निखारने के लिए अनुवाद ही एकमात्र अचूक साधन है। इस तरह अनुवाद द्वारा मानव की एकता को रोकनेवाली भौगोलिक और भाषाई दीवारों को ढहाकर विश्वमैत्री को और भी सुदृढ़ बना सकते हैं।

अंतर्राष्ट्रीय संस्कृति के युग में अनुवाद एक महत्त्वपूर्ण कार्य है। संयुक्त राष्ट्रसंघ की मान्यता प्राप्त भाषाओं-अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, रूसी, चीनी एव अरबी के अतिरिक्त हिंदी, स्पेनिश आदि भाषाओं का महत्त्व भी अनुवाद के क्षेत्र में निरंतर बढ़ रहा है। मारिशस, फ़ीजी, सूरीनाम आदि देशों की प्रमुख भाषा के रूप में और विभिन्न भारतीय भाषाओं को जोड़नेवाली भाषा के रूप में हिन्दी एक व्यापक एवं प्रभावी अनुवाद-माध्यम बनती जा रही है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि बहुभाषिक, बहुजातीय और बहुसांस्कृतिक समाज को जोड़ने का दायित्व हिंदी अनुवाद के माध्यम से एक हद तक पूरा हुआ है। आज अनुवाद की वजह से ही हम अपने ही देश की अन्य संस्कृति तथा आचार-व्यवहार था साहित्य से परिचित हैं। भारत बहुत पहले से ही इतना विशाल और बहुविध संस्कृतियों का

देश रहा है कि अनुवाद के बिना यह जान पाना संभव नहीं हो पाता कि किस प्रदेश की क्या विशेषता है? अगर अनुवाद न होता तो हम आज तक कई मामलों में अनभिज्ञ बने रहते और समाज का इतना विकास न हुआ होता। चूंकि भारत की राजभाषा हिन्दी है इस कारण भी हिन्दी एक ऐसी भाषा के रूप में रही है जिसने बहु-संस्कृति और बहु-भाषिक समाज को एक सूत्र में बाँधे रखा है। अतः इस कथन से पूर्णतः सहमत हुआ जा सकता है कि हिन्दी अनुवाद ने बहु-भाषिक, बहु-जातीय और बहु-सांस्कृतिक समाज को जोड़ने का दायित्व पूरा किया है।' मलयालम समकालीन कवि के.जी.शंकरपिल्लै की छोटी-छोटी 27 कविताओं का संकलन है **'कोच्चि के दरख्त'**। गद्यात्मक शैली पर लिखे गये तिरस्कार कविता का अनुवाद छन्दबद्ध कविता की तुलना में सरलकार्य हैं। कविता की संवेदना तथा संप्रेषणीयता को अनूदित रचना में भी बरकरार रखने में अनुवादक डॉ.अरविन्दाक्षन जी ने विशेष ध्यान दिया है। समतुल्य अथवा सममूल्य शब्दों का चयन, प्रतीकों एवं बिंबों का सही अन्तरण, भाषापरक जटिलताओं से बचने केलिए विशेष कुशलता का प्रदर्शन आदि अनुवाद के स्तर को बढाया है।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची

## आधार ग्रन्थ


1. के.जी.शंकरपिल्लै,(अनुःडॉ.ए.अरविन्दाक्षन) कोच्ची के दरख्त,वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,1986
2. , കെ ജി ശങ്കരപിള്ള, കെ ജി ശങ്കരപിള്ളയുടെ കവിതകൾ 1969 - 1996 ഡി.സി ബുക്സ്, കോട്ടയം,2008.


सहायक ग्रन्थ


1. डॉ. एन.ई. विश्वनाथ अय्यर, अनुवाद भाषाएँ समस्याएँ, स्वाती प्रकाशन, 1986.
2. डॉ. कृष्णकुमार, अनुवाद विज्ञान भी भूमिका, गोस्वामी, 2008.
3. डॉ. कैलाशचन्द्र भाटिया, अनुवाद कला सिद्धान्त और प्रयोग, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली 1885.
4. (सं) गार्गी गुप्त, अनुवाद चिन्तन के सैद्धान्तिक आयाम, भारतीय अनुवाद परिषद, 1991.
5. जयंती प्रसाद नौटियाल, अनुवाद सिद्धान्त और व्यवहार, राधाकृष्ण प्रकाशन, 2000.
6. डॉ. जी. गोपिनाथन, अनुवाद सिद्धान्त एवं प्रयोग, लोकभारती, इलहबाद, 1985.
7. डॉ. गोपीनाथन, केरल की सांस्कृतिक विरासत, वाणिप्रकाशन, 2002.
8. डॉ. नागलक्ष्मी, अनुवाद चिन्तन दृष्टि और अनुदृष्टि, जवहर पुस्तकालय, मधुरा, 2009.
9. डॉ. भोलानाथ तिवारी, अनवाद विज्ञान, किताब घर, 1972.
10. डॉ. गोपीनाथन,केरलीयों की हिन्दी को देन, राजकमल प्रकाशन,1983.

# सूचनाएँ

- यह एक नमूना मात्र है। इसका नकल न करें ।
- This is only a model. Do not copy it.
- कोर कोर्स (core course) से संबन्धित किसी भी विषय पर परियोजना तैयार करें।
- You can select any topic related with core course for the project
- नीछे कुछ विषयों की सूची दिया है, उससे भी चयन कर सकते हैं।
- Some topics given below, can makes use it.

1. हानूश नाटक में चित्रित कलाकार की समस्यएँ ।
2. निराला की कविताएँ और छायावाद।
3. केरल में हिन्दी साहित्य : एक परख।
4. हिन्दी साहित्य को भारतेन्दु का योगदान।
5. प्रमचन्द और तकषी शिवशंकर पिल्लै की कहानियों का तुलनात्मक अध्ययन।
6. भूमंडलिकरण एवं तुलनात्मक अध्ययन।
7. अनामिका की कहानियों में स्त्रीविमर्श।
8. हिन्दी साहित्य और महात्मा गाँन्धी।
9. चित्रा मृदुगल की कहानियों में नारी जीवन की समस्याएँ।

10. अय्यपपणिकर और अज्ञेय की कविताओं का तुलनात्मक अध्ययन।
11. ओंप्रकाश वाल्मीकी की कहानियों में दलित प्रतिरोध।
12. नासिराशर्मा के कविताओं में पर्यावरणः एक अध्ययन।
13. हिन्दी साहित्य में आदिवासी शोषण – 'पोस्टर' नाटक के विशेष संदर्भ में।

**या**

**मलयालम के कोई कहानी संग्रह या कविता संग्रह चुनकर मौलिक रूप से हिन्दी में अनुवाद करें। इसका मूल पाठ परियोजना में संलग्न करें।**

**Model project prepared by:**

**Dr. Sreekala.T.K**
**Asst. Professor**
**Department of Hindi**
**School of Distance Education**
**University of Calicut**

**For further details contact : sdebahindi@uoc.ac.in**